CELEBRATING 60 YEARS

साहित्योत्सव 2015

9-14 मार्च

साहित्य अकादेमी
दैनिक समाचार बुलेटिन

शनिवार, 14 मार्च 2015

आज के कार्यक्रम

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र

विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी
पूर्वाह्न 10:00 बजे
साहित्य अकादेमी सभागार
प्रथम तल

बाल साहिती
आओ कहानी बुने

बाल साहित्य से संबंधित दिन भर का कार्यक्रम
पूर्वाह्न 10.30 बजे
रवींद्र भवन परिसर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्र की बजाय क्षेत्र ज़्यादा यथार्थ और निकट है

साहित्योत्सव 2015 के दौरान आयोजित ‘भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र’ विषयक संगोष्ठी के दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की, जो ‘दक्षिण भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र’ विषय पर केंद्रित थी। प्रो. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र की अवधारणा के उद्भव पर अपने विचार रखे तथा कहा कि उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से लेकर बीसवीं सदी के मध्य तक उपन्यास को राष्ट्र के वर्णन के एक उपकरण के रूप में देखा जाता रहा। उसके बाद के कथा साहित्य में प्रादेशिकता का प्रसार हुआ, जिसके मुख्यतः दो कारण हैं, पहला; लोगों ने यह मानना शुरू कर दिया कि राष्ट्र की बजाय क्षेत्र ज़्यादा यथार्थ और निकट है। दूसरा; स्थानीयता के माध्यम से जनता के मुद्दों का प्रश्रय दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि दलित, आदिवासी, स्त्री, द्विलिंगी लोग जैसे विविध समुदाय और वर्ग, जिनका कोई राष्ट्र नहीं है; तथा भूमंडलीकरण भी इसके प्रमुख पक्ष हैं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए।

इस सत्र में मलयाळम् लेखक एम. मुकुंदन ने ‘मलयाळम् कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र’ विषयक अपने आलेख में कहा कि राष्ट्र निर्माण एक अनवरत प्रक्रिया है; तथा क्षेत्रीय लेखन, विशेषकर क्षेत्रीय कथा साहित्य को राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता में योगदान के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उन्होंने मलयाळम् कथाकृतियों को संदर्भित करते हुए क्षेत्र की अवधारणा के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया। इस सत्र में अंपाशैया नवीन और ए. आर. वेंकटचलपति ने क्रमशः ‘तेलुगु कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र’ तथा ‘काला सुंदर है : तमिलनाडु के ब्लैक कॉटन स्वायल (कारिसाल) क्षेत्र का साहित्य, विशेष संदर्भ : चो. धर्मन का कथा साहित्य’ विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

‘उत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र’ विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रख्यात मराठी लेखक एवं विद्वान भालचंद्र

नेमाडे ने की। इस सत्र में कांजी पटेल और राना नायर ने क्रमशः 'गुजराती कथा साहित्य में जनजाति एवं राष्ट्र' तथा 'पंजाबी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. नेमाडे ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि क्षेत्र का सीमांकन विवाद का विषय है और इसमें परिवर्तन होता रहता है। उन्होंने कहा कि किसी न किसी तरीक़े से सभी लेखक केवल क्षेत्रीय होते हैं।

पंचम सत्र 'पश्चिम भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता गुजराती साहित्यकार सितांशु यशश्चंद्र ने की। इस सत्र में दामोदर मावजो, मोहन गेहाणी और प्राची गुर्जरपाध्ये ने क्रमशः 'पश्चिम भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र', 'भारतीय कथा साहित्य, विशेषकर सिंधी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' तथा 'आधुनिक मराठी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

'उत्तर-पूर्व भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक षष्ठ सत्र निर्मलकांति भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अनिल कुमार बोरो तथा थ. रत्नकुमार सिंह ने क्रमशः बोडो और मणिपुरी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र के संदर्भों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. बोरो ने कहा कि बोडो कथा साहित्य अभी पचास साल का भी नहीं हुआ; और यह बहुत ही ज्यादा उप-क्षेत्रीय प्रकृति का है। इस सत्र में एम. असदुद्दीन ने 'पूर्वोत्तर भारत का साहित्य : परिभाषा तथा संचयन की समस्याएँ' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर में भाषाओं के समुच्चय मौजूद हैं, जिनमें प्रचुर साहित्य रचना हो रही है; लेकिन सबसे बड़ी समस्या यही है कि सबकुछ अनदेखा रह जा रहा है तथा कुछ विशेष भाषाओं का साहित्य ही पूर्वोत्तर के साहित्य के रूप में रेखांकित और संचयित हो रहा है। अपने अध्यक्षीय भाषण में निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने कहा कि यदि क्षेत्र का विचार राष्ट्र से अधिक यथार्थपूर्ण है तो हमें इनकी प्रवृत्तियों के अंतर्संबंधों की अधिकाधिक पड़ताल करने की ज़रूरत है; क्या यह द्वंद्वात्मक है अथवा पूरक; आदि।

संगोष्ठी का आरंभ अकादेमी के सचिव के औपचारिक स्वागत भाषण से हुआ, जबकि सत्रों का संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया।

अतीत के गलियारे से

अपनी स्थापना के प्रथम वर्ष में अकादेमी ने अपने पुस्तकालय के लिए 700 पुस्तकें प्राप्त की और अगले वर्ष 6800। वर्तमान में अकादेमी के दिल्ली स्थित पुस्तकालय में 24 भाषाओं की 1,66,000 किताबें हैं तथा सभी क्षेत्रों और साहित्य से संबंधित 200 पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं। अकादमी के तीनों क्षेत्रीय केंद्रों में भी पुस्तकालय हैं।

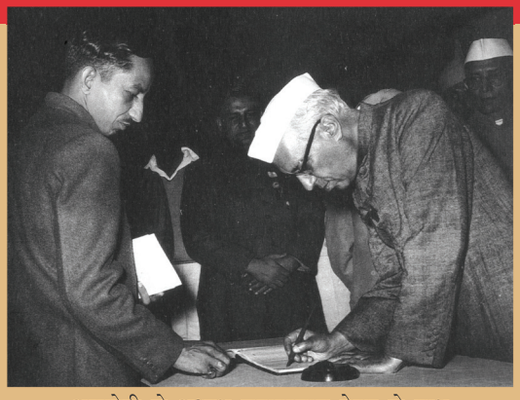

अकादेमी के अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू के साथ
पहले पुस्तकालयाध्यक्ष बी.आर.एम. राव

उत्तर पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव के पाँचवें दिन आज 'पूर्वोत्तरी' शृंखला के अंतर्गत 'उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखन सम्मिलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि उत्तर-पूर्व में बोली जाने वाली भाषाएँ केवल भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में सबसे विविध एवं समृद्ध भाषाएँ हैं। तिवारी जी ने कहा कि लिखित भाषा और अलिखित भाषा के अतिरिक्त भी एक भाषा होती है, जिसे देह भाषा कहते हैं और वह भाषा संप्रेषण के अनेक रास्तों को खोलते हुए हम सबको बहुत कुछ संप्रेषित कर जाती है। अंत में उन्होंने अपनी एक कविता 'गुनाहों का सबूत' का पाठ भी किया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम पिछले वर्ष 2014 के साहित्योत्सव से प्रारंभ किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखकों को साथ लाकर उनके साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करना है, जिससे भारत की समृद्ध साहित्यिक परंपरा को एक नई दिशा मिल सके।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखिका करबी डेका हजारिका ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने साहित्य के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए कहा कि एक अकेली कविता भी अपने आप में साहित्य की लघु पुस्तिका होती है। भवानी अधिकारी ने कार्यक्रम की शुरुआत अपनी दो मणिपुरी कविताओं 'मूल्य' तथा 'कारीगर' एवं एक नेपाली कविता 'गाँव का उदास आँगन' से की। उन्होंने इनको मूल भाषा में एवं इनके हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

के. जयमति देवी (मणिपुरी), उदय कुमार शर्मा (असमिया), नवीन मल्ल बोरो (बोडो), मीठेश निर्मोही (राजस्थानी), उद्भ्रांत (हिंदी), पंकज पराशर (मैथिली), जगविंदर जोधा (पंजाबी), सरोज कौशल (संस्कृत) और मजीद मजाज़ी (कश्मीरी) ने अपनी कविताएँ मूल भाषा तथा हिंदी / अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत की।

दूसरा सत्र कहानी पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता अनिल कुमार बोरो ने की। असमिया के प्रख्यात लेखक जयंत माधव बोरा ने अपनी कहानी 'रावण' का अंग्रेज़ी में पाठ किया। मणिपुरी के मायङलमबम कंदेश सिंह ने अपनी कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाया, जिसका शीर्षक 'हू इस द अननोन पर्सन' था। भगवानदास मोरवाल ने अपनी हिंदी कहानी 'बस तुम न होते पिताजी' का पाठ किया। बीना विश्वास ने अपनी अंग्रेज़ी कहानी 'माइ ओबिच्युरी' के पाठ से कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र की अध्यक्षता सुरेश ऋतुपर्ण ने की, जिसमें नेपाली कवि टी.बी. चंद्र सुब्बा, असमिया कवि रणजीत कुमार बरुआ, बोडो कवि दिननाथ बसुमतारि, मणिपुरी कवयित्री एच. वेणुबाला देवी, हिंदी कवयित्री अलका सिन्हा, पंजाबी कवि दर्शन सिंह बुट्टर, संताली कवि श्याम बेसरा, कश्मीरी कवि शौकत अंसारी, डोगरी कवि दर्शन दर्शी तथा उर्दू कवि राजेश रेड्डी ने अपनी कविताओं एवं ग़ज़लों का पाठ किया। राजेश रेड्डी की ग़ज़ल के इस शेर ने श्रोताओं की तालियाँ बटोरीं--

मेरे दिल के किसी कोने में एक मासूम-सा बच्चा
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है

कार्यक्रम में पठित कविताओं में मानव मन की गहरी अनुभूतियों से लेकर देश-दुनिया की तमाम चिंताओं और सरोकारों की गहरी अभिव्यक्तियाँ थीं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्यधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

राजस्थानी लोकगीतों की प्रस्तुति

मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में बुंदू खान लंगा तथा अनवर खान मांगणियार ने अपने साथियों के साथ राजस्थानी लोक गायन प्रस्तुत किया गया। लंगा समुदाय से आने वाले बुंदू खान पारंपरिक लोक गायन के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक हैं। मांगणियार पारंपरिक लोक गायन के अतिरिक्त सूफ़ी गायन के लिए भी जाने जाते हैं। ये दोनों ही संगीत की कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। दोनों ही लोककलाकारों के गायन ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रस्तुति के बाद अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने फूलों से सभी कलाकारों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001, दूरभाषः 011-23386626-28

DD NATIONAL
Media Partner

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रति दिन पूर्वाह्न 10 से सायं 7.00 बजे तक
रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in